

# गांधी-विचारों की रंगों भरी परिक्रमा

वर्षा दास

पिछले दिनों दिल्ली में 'स्ट्रीट आर्ट फेस्टिवल' का बोलबाला रहा। देशी-विदेशी चित्रकारों ने लगातार पचास दिनों तक दिल्ली की गलियों और बड़ी सड़कों पर, मकानों की और अहातों की दीवारों पर बड़े-बड़े चित्र बनाए। कलादीर्घाओं की चारदीवारी में बंद कलाकृतियों को देखने का एक अलग प्रकार का आनंद है और ऊँचे-ऊँचे मकानों की दीवारों पर चित्र बनाना और रास्ते पर चलते हुए उसे देखना, इसका भी एक अलग आनंद है।

इन दिनों वहेरा आर्ट गैलरी में सैयद हैदर रजा के नए चित्र प्रदर्शित किए गए हैं। इस प्रदर्शनी का शीर्षक है 'परिक्रमा:

गांधी की चारों ओर'। प्रदर्शनी में वैसे तो बारह चित्र प्रदर्शित किए गए हैं जिनमें से सात गांधी-विचार से संबंधित हैं। उनके शीर्षक से ही दर्शक समझ पाएंगे। ये सातों चित्र सन 2013 के दौरान कैनवास के ऊपर एक्रलिक रंगों से बनाए गए हैं।

150 गुणा 150 सेमी का एक चित्र है 'सन्मति'। रजा साहब की ज्यामितिक संरचना दूर से ही पहचानी जा सकती है। यह भी वैसे ही एक संरचना है। चित्र के केंद्र में काले रंग का एक बड़ा वृत्त है। यह वृत्त एक वर्गाकार में बंधा है। उसके चारों ओर बनते तिकोनों में लाल, पीला, नीला रंग भरा गया है। यह एक और वर्गाकार में बंधा है जिनके कोण कैनवास की चारों किनारियों के मध्य भाग से मिलते हैं। इसके कारण और भी

तिकोन बनते हैं, तिकोनों का तिकोनों में विभाजन होता है। चित्र के नीचे के हिस्से में दाहिनी ओर एक पंक्ति लिखी गई है- 'सबको सन्मति दे भगवान'। इस पंक्ति का शाश्वत मूल्य है और आज की सामाजिक विषम परिस्थितियों में इस प्रार्थना का मूल्य और भी बढ़ जाता है।

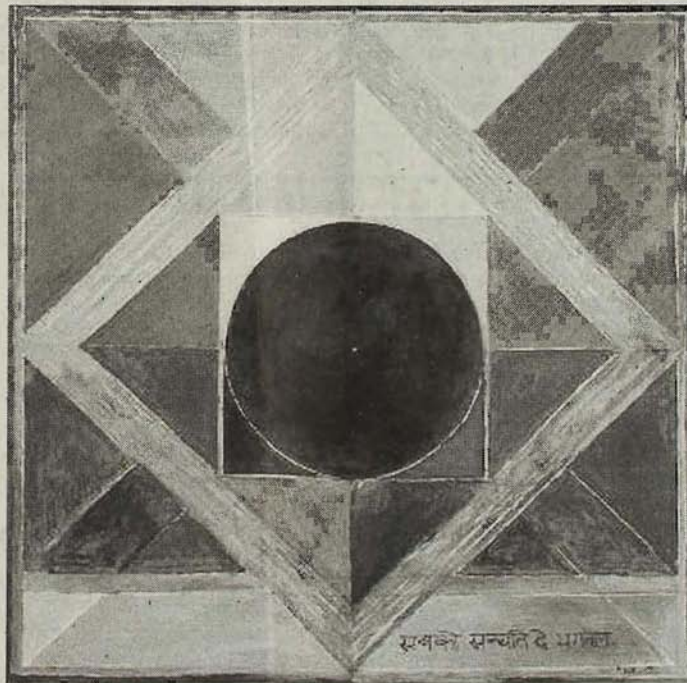
150 गुणा 120 सेमी के खड़े कैनवास की पृष्ठभूमि हल्के रंगों से बनाई गई है। इस चित्र का शीर्षक है- 'महात्मा गांधी के कुछ विचारों का अंश'। कैनवास के ऊपर नागरी लिपि में लिखावट है। इनमें कुछ वाक्य इस अर्थ के हैं: 'सत्य हर इंसान का अपना, उसके हृदय में बसा हुआ होता है। दूसरों को अपना सत्य देखने के लिए मजबूर न करें।

संतोष कोशिश करने में है, पाने में नहीं। पूरी कोशिश पूरी जीत होती है।' अंत में गांधीजी का प्रचलित कथन है, 'वही बचेगा जो मैंने किया, वह नहीं जो मैंने कहा या लिखा।' और उसके नीचे 'मो. क. गांधी'।

150 गुणा 150 सेमी का एक वर्गाकार कैनवास का शीर्षक है- 'स्वधर्म' और इस कैनवास पर की लिखावट में विनोबा भावे के गीता प्रवचन से कुछ वाक्य लिए गए हैं। पीले और केसरिया रंगों की मिश्रित पृष्ठभूमि के ऊपर कैनवास के ऊपरी हिस्से में बने केसरी रंग के चौकोर के मध्य में लिखा है 'स्वधर्म' और उसके नीचे गीता प्रवचन से लिए गए वाक्य, जैसे कि 'रजोगुण के प्रभाव से मनुष्य विविध धंधों-कार्यों में रोग अड़ाता रहता है। गीता का कर्मयोग रजोगुण का

रामबाण उपाय है।' समांतर लिखी गई नौ पंक्तियों का प्रत्येक अक्षर दो-दो रेखाओं से लिखा गया है और बीच की खाली जगह को

शुरू की पंक्तियों में काले रंग से भर दिया है, बाद की पंक्तियों को काली रेखाओं से भरा है। इसके कारण अक्षरों का आकार समान



रजा की एक कृति

होते हुए भी उनके घनेपन में अंतर है।

उपरोक्त दोनों चित्र रंगीन पृष्ठभूमि पर लिखावट से बनाए गए हैं। इन पंक्तियों के कारण सुरुचिपूर्ण अमूर्त कृति तो बनती ही है, पंक्तियों के महत्त्वपूर्ण कथनों के कारण मानव सरोकार का आयाम भी उससे जुड़ जाता है।

150 गुणा 150 सेमी का चित्र 'पीड़ पराई' आज तक देखे गए रजा साहब के चित्रों से नितान्त भिन्न है। धूम्रवर्ण की पृष्ठभूमि के ऊपर रंगों का एक आड़ा पट है और दाहिनी ओर एक बड़ा-सा आयताकार। मानो प्रार्थना सभा में बैठने के लिए गांधीजी की गद्दी है। उस आड़े पट के नीचे आड़ी लिखावट है- 'वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीड़ पराई जाणे रे'। नियताकार के भीतर के तूलिकाघात और सौम्य रंगों के अनियत सामीप्य से यह कृति अनोखी बनी है।

'शांति' शीर्षक का चित्र आयताकार होते हुए भी उसके ऊपरी वर्गाकार हिस्से में वृत्तों का तरंगित फैलाव है। सफेद और भूरे रंग के प्राचुर्य से चित्र द्विरंगी लगता है। नीचे के पट्टे में, मध्य भाग में लिखा है 'शांति'। उन्नी प्रकार दूसरा आयताकार कैनवास है 'सत्य'। इसमें भी नीचे के धूम्रवर्ण के पट पर लिखा है 'सत्य' और ऊपर के वर्गाकार कैनवास पर रंगों की आड़ी धारियाँ हैं। एक सौम्य संरचना।

रजा जैसे मूर्धन्य कलाकार जब गांधीजी के विचारों की अपनी तूलिका से परिक्रमा करते हैं तब उनके हृदय का सत्य भी आविर्भूत होता है। दर्शकों के लिए यह सुखद अनुभव है।

यह प्रदर्शनी अप्रैल के अंत तक चलेगी।